कक्षा : नवमी– जैन सिद्धान्त प्रभाकर–पूर्वार्द्ध (परीक्षा 23 जुलाई, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) वैक्रियवाद के प्रवर्तक थे-
(क) आषाढ़ाचार्य (ख) स्थविर
(ग) गंगाचार्य (घ) षडुलूक (ग)

(b) जीव संयम विषयक पुरूषार्थ नहीं कर पाता-
(क) सम्यक्त्व मोहनीय से (ख) चारित्र मोहनीय से
(ग) मिश्र मोहनीय से (घ) दर्शन मोहनीय से (ख)

(c) अंधविश्वास किस प्रमाद के अन्तर्गत आता है-
(क) मद्य (ख) विषय
(ग) विकथा (घ) निद्रा (घ)

(d) पर्वतीय गुफा में बुझे हुए दीपक वाले पुरूष के समान बताया गया है-
(क) धनासक्त प्राणी को (ख) काम-भोगों में आकृष्ट जन को
(ग) प्रमादी को (घ) स्वेच्छाचारी को (क)

(e) ' न बंधवा बंधवयं उवेंति' गाथांश संदेश देता है-
(क) धन त्राणदायक है (ख) अप्रमत्तता का
(ग) स्वच्छंदता निरोध का (घ) कृतकर्म में सबका हिस्सा नहीं (घ)

(f) तत्त्वार्थसूत्र के 6वें अध्याय में वर्णन किया गया है-
(क) अजीव द्रव्य (ख) आस्रव
(ग) संवर (घ) बंध (ख)

(g) जिसमें स्वयं भी दृढ़ श्रद्धावान् होकर सम्यक् आचरण करे तथा अन्य को भी प्ररेणा करें, वह सम्यक्दर्शन है-
(क) वेदक (ख) रोचक
(ग) दीपक (घ) कारक (घ)

(h) सर्वार्थसिद्ध विमान के देव को सिद्ध कहना किस निक्षेप के अन्तर्गत आयेगा-
(क) नाम (ख) स्थापना
(ग) द्रव्य (घ) भाव (ग)

(i) ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से परीषह होते हैं-
(क) 2 (ख) 11
(ग) 7 (घ) 8 (क)

(j) दूसरे गुणस्थान में हेतु पाये जाते हैं-
(क) 55 (ख) 50
(ग) 43 (घ) 46 (ख)

(k) जिस भव में उपशम श्रेणी होती है- उस भव में क्षपक श्रेणी नहीं होती, यह मान्यता है-
(क) कर्मग्रन्थ की (ख) पंच संग्रह की
(ग) भगवती सूत्र की (घ) विशेषावश्यक भाष्य की (ग)

(l) स्याद्वाद् है-
(क) संशयवाद (ख) सम्भावना वाद
(ग) अनिश्चयवाद (घ) अपेक्षावाद (घ)

(m) वातावरण के तनावपूर्ण बने रहने का कारण नहीं है-
(क) उदारता (ख) हठवादिता
(ग) दम्भ (घ) स्वार्थवृत्ति (क)

(n) विकारोत्पादक वस्तुओं का त्याग होता है-
(क) एकाशन में (ख) एकलठाणा में
(ग) नीवीं में (घ) दया में (ग)

(o) प्रत्याख्यान में कितने प्रकार की विशुद्धि का उल्लेख है-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 14 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) 'जुगुप्सा' संयम का पर्यायवाची है- (हाँ)

(b) मनुष्य जन्म पा लेने पर भी धर्मश्रवण दुर्लभ नहीं है। (नहीं)

(c) केवल का अर्थ निर्मल-निष्कलंक है। (हाँ)

(d) मनुष्य कुबुद्धि के वशीभूत होकर पापकर्मों से धन नहीं कमाते हैं। (नहीं)

(e) धन अत्राणदायक है। (हाँ)

(f) प्रशमरति प्रकरण के रचनाकार आचार्य उमास्वाति हैं। (हाँ)

(g) प्रमाण अनेक अंशों को ग्रहण नहीं करता है। (नहीं)

(h) श्वेताम्बर परम्परा मन को सम्पूर्ण शरीर व्यापी मानती हैं। (हाँ)

(i) छद्मस्थपन की तरंग से सम्यक्त्व में मलिनता आ जाने पर चल दोष होता है। (नहीं)

(j) क्षयोपशम की अभिन्नता से ही विरताविरत के असंख्यात स्थान बनते हैं। (नहीं)

(k) सिद्धों में 2 भाव होते हैं। (हाँ)

(l) खण्ड सत्य से अखण्ड सत्य के साक्षात्कार की प्रक्रिया अनेकान्त से ही संभव है। (हाँ)

(m) 'सयं सयं पसंसंता, गरहंता परं वयं' यह गाथांश प्रश्नव्याकरण से लिया गया है। (नहीं)

(n) एकाशन में भोजन करने वाले को हाथ और मुँह के अलावा शेष अंग हिलाना नहीं है। (नहीं)

(o) पौषध के 18 दोष हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	गोष्ठामाहिल	(क) अबद्धपोतवाद	स्थिरीकरणवाद
(b)	बोटिक शिवभूति	(ख) स्थिरीकरणवाद	अबद्धपोतवाद
(c)	निद्रा	(ग) निर्वाण प्राप्ति	गफलत
(d)	विकथा	(घ) गफलत	चुगली
(e)	आत्मशुद्धि	(च) भगवती सूत्र	निर्वाण प्राप्ति
(f)	अयोगी केवली	(छ) यथाख्यात चारित्र	अविग्रह गति
(g)	सयोगी केवली	(ज) अविग्रह गति	यथाख्यात चारित्र
(h)	अनेकान्त	(झ) सौन्दर्य	सिद्धसेन
(i)	भंगी	(य) याचना परीषह	सौन्दर्य
(j)	संकल्पदृढ़ता	(य) सिद्धसेन	योगशास्त्र
(k)	सुप्रत्याख्यान	(ल) योगशास्त्र	भगवती सूत्र
(l)	मार्गणा	(व) चुगली	संज्ञी
(m)	संवृत	(क्ष) चिह्न	योनि
(n)	निश्रित	(त्र) योनि	चिह्न
(o)	चारित्र मोहनीय	(ज्ञ) संज्ञी	याचना परीषह

:: ::

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	मेरा प्रयोग नीचे के देवों की उत्पत्ति स्थान के लिए प्रयुक्त है।	आसुर
(b)	मुझमें स्थिर हो जाने पर आत्मा परमनिर्वाण को प्राप्त होता है।	धर्म
(c)	मेरे मत में जीव सिद्ध होने के बाद पुनः संसार में आ जाता है।	आजीवक
(d)	मुझको करने से पूर्व परिणाम का विचार करना चाहिए।	दुष्कर्म
(e)	मैं अपनी सुरक्षा के लिए दूसरों से अपेक्षा रखता हूँ।	धन
(f)	मेरा लक्षण आत्मा की आत्मा से अनुभूति होना है।	निश्चय सम्यग्दर्शन
(g)	अप्रतिपातिकता के कारण में विशेष हूँ।	विपुल मति मन पर्यव ज्ञान
(h)	मैं विचार शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पर अर्थ भेद की कल्पना करता हूँ।	समभिरूढ नय
(i)	संज्वलन तथा नोकषाय की भिन्नता से ही मेरे असंख्यात स्थान बनते हैं।	संयम
(j)	मुझ में 14 क्रियाएँ पायी जाती हैं।	सूक्ष्म संपराय
(k)	मेरे उदय से 11 परीषह होते हैं।	वेदनीय
(l)	मेरे गुण कभी नष्ट नहीं होते हैं।	पदार्थ
(m)	मेरी आज समग्र विश्व को आवश्यकता है।	शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व
(n)	मैं आस्रव द्वारों को बन्ध करता हूँ।	प्रत्याख्यान
(o)	मेरा अर्थ आयुष्य का अन्तिम भाग है।	भवचरिम

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2 = (16)**

(a) उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 3 के अनुसार मनुष्यायु के बंध के कारणों का उल्लेख कीजिए।

उ. कषाय की मंदता, प्रकृतिभद्रता, विनीतता, सदयता और अमत्सरता आदि गुणों के कारण विशेष शुद्धि हो जाने से मनुष्यायु का बंध होता है।

(b) विचार शक्ति को मन्द करने वाले कारणों से बचने के लिए अप्रमत्त साधक को क्या-क्या करना चाहिए ?

उ. संयमी साधक उन मन्दस्पर्शों की ओर मन को जरा भी आकृष्ट न होने दे तथा अप्रमत्त साधक को चाहिए कि वह क्रोध से स्वयं को बचाए, अहंकार को हटाए, माया का सेवन न करे और लोभ का त्याग करे।

(c) मनुष्य भव में प्राप्त होने वाले 10 अंग लिखिए।

उ. 1. चार कामस्कंध 2. मित्रवान् 3. ज्ञातिमान् 4. उच्चगोत्रीय 5. वर्णवान
6. नीरोग 7. महाप्राज्ञ 8. अभिजात 9. यशस्वी और 10. बलवान (सामर्थ्यवान्)

(d) प्रतिबुद्ध के 2 प्रकार लिखिए।

उ. 1. जो नींद में न हो 2. जो धर्माचरण के लिए जाग्रत हो।

(e) मोक्ष तत्त्व का अर्थ लिखिए।

उ. सभी कर्मों का जड़मूल से क्षय हो जाना। परिपूर्ण शुद्ध आत्म-स्वरूप प्रकट हो जाना।

(f) गुणस्थान की परिभाषा लिखिए।

उ. आत्मा के ज्ञान-दर्शन चारित्र आदि गुणों की शुद्धि-अशुद्धि और उत्कर्ष-अपकर्ष अवस्था के वर्गीकरण को गुणस्थान कहते हैं।

(g) व्यापक अहिंसा में समाहित तत्त्वों का उल्लेख कीजिए।

उ. किसी को नहीं मारना, मरते हुओं को बचाना, प्राणी मात्र के साथ प्रेम, वात्सल्य और मैत्री सम्बन्ध

स्थापित करना व्यापक अंहिसा में समाहित है।

(h) प्रवचन सारोद्धार के अनुसार प्रत्याख्यान की परिभाषा लिखिए।

उ. मर्यादा के निर्धारणपूर्वक अविरति का प्रतिज्ञा रूप कथन करना प्रत्याख्यान या पच्चक्खाण है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) संयमविषयक पराक्रम दुर्लभतम है। स्पष्ट कीजिए।

उ. न केवल मनुष्यत्व को पाये हुए अपितु धर्मश्रवण एवं उस पर श्रद्धा करने वाले सात्यकि, श्रेणिक आदि की तरह बहुत से व्यक्ति चारित्रमोहनीय-कर्मोदयवश संयम-विषयक पुरुषार्थ-पराक्रम नहीं कर पाते। इस कारण संयम विषयक पराक्रम इन सबमें दुर्लभतम है।

(b) आत्मानुरक्षी अप्रमत्त होकर कैसे विचरण करे ?

उ. कोई भी व्यक्ति आत्म-विवेक झटपट नहीं प्राप्त कर सकता, इसलिए अभी से ही कामभोगों का परित्याग करके मोक्षमार्ग के लिए समुद्यत होकर लोक (प्राणीजगत) का समत्वभाव से सम्यक्रूप से विचार करे। समतापूर्वक अप्रमत्त रूप से विचरण करते रहें।

(c) ' सिद्धे हवइ सासए ' गाथांश का विवेचन कीजिए।

उ. शाश्वत (निरन्तर अवस्थिति वाला) सिद्ध हो जाता है। ऐसा कहने का आशय यह है कि आजीवक, बौद्धादि कुछ दार्शनिकों के मत में जीव सिद्ध होने के बाद भी पुनः संसार में आ जाता है, इसका निराकरण करने हेतु बताया गया है कि पुनःजन्म के कारणभूत कर्मबीज का सर्वथा उच्छेद हो जाने से सिद्ध सदाकाल स्थायी होते हैं।

(d) चार दुर्लभ अंगों के अतिरिक्त अन्य दुर्लभ अंग कौन से हैं ?

उ. मानुष्य (मनुष्य भव), आर्यक्षेत्र, उत्तमजाति-कुल, रूप (पूर्णांगता), आरोग्य, पूर्ण आयुष्य, परलोकप्रवण बुद्धि, धर्मसम्बद्ध श्रवण, अवग्रह (अवधारण करना), श्रद्धा और संयम।

(e) नय किसे कहते हैं ?

उ. प्रत्येक पदार्थ अनन्त गुणधर्मात्मक होते हैं। उनमें अनेक विशेषताएँ पायी जाती हैं। उनमें से किसी एक गुण को प्रधानता देकर अन्य गुणों को गौण करते हुए, परन्तु अन्य गुणों का निषेध नहीं करते हुए जानना अथवा कथन करना 'नय' है।

(f) उपयोग इन्द्रिय को परिभाषित कीजिए।

उ. लब्धि, निवृत्ति तथा उपकरण इन तीनों के मिलने से जो रूपादि विषयों का सामान्य विशेष बोध होता है, उसे उपयोग इन्द्रिय कहते हैं। उपयोग इन्द्रिय मतिज्ञान रूप तथा चक्षु-अचक्षु दर्शन रूप है।

(g) चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से कितने परीषह होते हैं ? नाम लिखिए।

उ. चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से सात परीषह होते हैं- अचेल, अरति, स्त्री, निषद्या (बैठना), आक्रोश, यातना और सत्कार-पुरस्कार।

(h) निमित्त द्वार को समझाइए।

उ. पहले से चौथे तक चार गुणस्थान, दर्शनमोहनीय के निमित्त से होते हैं। पाँचवें से बारहवें तक आठ गुणस्थान चारित्र मोहनीय के निमित्त से होते हैं। तेरहवाँ योगों के सद्भाव के निमित्त से तथा चौदहवाँ गुणस्थान योगों के अभाव के निमित्त से होता है।

:: ::